intend to move a privilege motion against the journalist, against the editor and the publisher of the newspaper. This is vilification of the character of a particular Member of this House and the Committee of Privileges should examine the matter I am really surprised to note that even though the hon. Member is a very senior Member of the ruling party, no Member belonging to the ruling party has moved a privilege motion.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You can write to the Chairman. It is entirely up to the Chairman to take a decision.

SHRI MD. SALIM (West Bengal): Mr. Prasada is a Member of this House. He is a Member of the Committee of Privileges also.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let the Chairman take note of this. You give a notice of privilege and let the Chairman take a decision. Whatever he decides, I will inform the House.

RE: MISBEHAVIOUR OF SECURITY PERSONNEL IN PARLIAMENT HOUSE COMPLEX AND PARLIAMENT HOUSE ANNEXE

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): उपसभापति जी, इस सदन के सदस्यों का सम्मान जनतंत्र का सम्मान है और इस सदन के सदस्यों का अपमान जनतंत्र का अपमान है। चूंकि आप इस सदन की कास्टोडियन हैं और आप यहां बैठी है, इसलिए इस गंभीर मामले को मैं आपके सामने रखना चाहता हूं।

उपसभापति: चेयरमेन साहब कस्टोडियन हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह: महोदया, कल जब सदन की कार्यवाही समाप्त हुई, कल आप भी यहां आखिरी समय तक इस कुर्सी पर थीं, यहां सदन की कार्यवाही समाप्त होने के बाद जब हम लोग बाहर निकले तो जो दृश्य हमने संसद भवन के परिसर में देखा, उसे देखकर मैं समझता हूं कि लोकतंत्र का उतना बड़ा अपमान शायद ही कभी हुआ हो, सदन के परिसर में इस तरह की हरकतें शायद ही कभी हुई हों। कल जब हम लोग यहां से अपने अपने आवास की ओर जाने के लिए निकल रहे थे तो उसी समय ठीक गांधी जी की जो प्रतिमा है, उसके पास मैंने देखा कि एक माइक्रोफोन फिटेड जीप गाड़ी पुलिस की आकर खड़ी हुई और वहां से कई माननीय सदस्य जो अपनी गाड़ी लाने के लिए जा रहे थे, कई लोग बस पकड़ने के लिए खड़े थे, कई लोग पैदल जा रहे थे, सबको वार्निंग देते हुए कहा कि निकलिए, हटिए सब लोग, जाइए इधर, इधर जाइए इतनी जोर से और अशिष्ट आवाज में कह रहे थे, जिसका इजहार नहीं किया जा सकता। एक माननीय सदस्य जो कार से आ रहे थे, अपनी गाड़ी खुद चला रहे थे मारूती कार, जब यह उधर आए तो चार पुलिस वाले जीप से उतरे और उनको जैसे गर्दन में हाथ लगाया जाता है उसी प्रकार गाड़ी को ठेलकर इस तरह से बाहर किया।

महोदया, उस वक्त हमारे साथ मेरे मित्र विप्लव दासगुप्त जी, मोहम्मद सलीम जी, उपेन्द्र जी, मीरा दास जी, दिग्विजय सिंह जी, जगेश देसाई जी भी कुछ दूर थे, रघवजी, शारदा मोहंती जी और बहुत से माननीय सदस्य खड़े थे। हम लोगों से यह सहन नहीं हुआ। जिस ढंग से धमकी दी जा रही थी, जिस ढंग से बात की जा रही थी, मैं समझता हूं कि ऐसी शर्म की बात बहुत कम होती है। हम जब सहन नहीं कर सके तो मैंने कहा, और मेरे साथ विप्लव दासगुप्त जी, मोहम्मद सलीम जी, बेबी जी वहां पर थे, हम लोग सब सामने जाकर खड़े हो गए कि हम लोगों के सीने के ऊपर से प्रधानमंत्री की गाड़ी जाए, हम लोग अपने को समाप्त करने के लिए तैयार हैं, लेकिन इस बात के लिए तैयार नहीं हैं।

महोदया, आतंकवाद से निपटने के लिए जो नया आतंकवाद चल रहा है, इस पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। सदन की कार्यवाही के बाद आप अपने कमरे में चली जाती हैं, लेकिन जब हम लोग लॉबी से, इधर लॉबी से बाहर निकलते हैं तो सामने हमारी नजर कुत्ते पर पड़ती है, ठीक सामने, जब हम बाहर निकलते हैं तो कुत्ते पर नजर पड़ती है, ब्लैक कमाण्डो पर नजर पड़ती है और जब बाहर परिसर में पहुंचते हैं तो कोई ऐसी जगह नहीं होती, जहां कि पुलिस के लोग खड़े नजर न आएं। ठीक है, मैं जानता हूं कि सुरक्षा आवश्यक है, प्रधान मंत्री की भी सुरक्षा हो, हर मंत्री की सुरक्षा हो, हर संसद सदस्य की सुरक्षा हो लेकिन सुरक्षा के नाम पर जो एक माहौल कुछ दिनों से चल रहा है वह गंभीर और शोचनीय है।

महोदया, यहां पुराने सदस्यगण उपस्थित हैं। आदरणीय गृह मंत्री, चव्हाण साहब जैसे लोग हैं, राम लखन सिंह यादव जैसे इतने पुराने व्यक्ति यहां पर उपस्थित हैं, जवाहर लाल जी के समय से लेकर आज तक इस तरह के सदस्यों का अपमान कभी नहीं हुआ। पंडित जी बराबर इस बात के लिए सक्रिय रहते थे कि पक्ष के सदस्य हों या विपक्ष के सदस्य हों, उनकी इज्जत लोकतंत्र की इज्जत है। आज पार्लियामेंट का मैम्बर जाता है, पुलिस वाले उसको एक-एक घंटे तक रोक देते हैं कि प्रधान मंत्री की गाड़ी गुजरने वाली है।

महोदया, मैं आपसे बड़े ही आदर के साथ यह चाहता हूं कि कल की जो घटना हुई, संसद भवन के परिसर के अंदर जब पार्लियामेंट का सैशन चल रहा हो कभी माइक्रोफोन एलाऊ नहीं होता, लेकिन पुलिस वाले माइक्रोफोन लेकर के अंदर घुसकर के जैसे कंट्रोल करते हैं, पार्लियामेंट के अंदर इस तरह से कभी नहीं होता था। हमारे वाच एंड वार्ड के लोग हैं, दोनों सदनों के अनुभवी लोग हैं, शिष्ट लोग हैं, जानकार लोग हैं, वे क्या इसको कंट्रोल नहीं कर सकते? यदि इतना अधिक किसी व्यक्ति की जान को खतरा हो तो लोकतंत्र की सेवा के लिए उसे नहीं रहना चाहिए, अच्छा है किसी काल-कोठरी में वह बंद हो जाए, लेकिन जनतंत्र को इस तरह से कलंकित, इस तरह से आतंकित कभी नहीं करना चाहिए।

महोदया, मैं बड़े ही आदर के साथ कहना चाहता हूं कि इस कॉम्प्लैक्स के अंदर पहले पुलिस नहीं आती थी और अब जब प्रधान मंत्री के जाने की बात होती है, मैं प्रधान मंत्री के खिलाफ कोई बात नहीं कर रहा हूं क्योंकि प्रधान मंत्री हों या, महोदया, आप हों, पहले आप संसद सदस्या हैं, प्रधान मंत्री भी पहले संसद सदस्य हैं फिर प्रधान मंत्री हैं।

उपसभापतिः उनको तो मालूम भी नहीं होगा।

श्री शंकर दयाल सिंहः मालूम हो या न हो, लेकिन मैं समझता हूं महोदया, कि जिस किसी ने भी आज का अखबार पढ़ा होगा उसको निश्चित रूप से पता चला होगा। मैं शुक्रगुजार हूं मतंग सिंह जी का, वे यहां उपस्थित हैं, कल जब यह घटना हुई तो मतंग सिंह जी वहां पहुंचे।

श्री पर्वतनेनि उपेन्द्र (आन्ध्र प्रदेश): हम भी गए थे। ..(व्यवधान)..

श्री शंकर दयाल सिंहः ये भी थे और भी थे और इन लोगों ने बीच-बचाव किया। मतंग सिंह जी ने यह भी कहा कि मैं इसकी इंक्वायरी करूंगा। लेकिन जिस तरह से, जिस अपमानजनक ढंग से बातें हुईं, हमारे सदस्यों को जिस तरह से रोका जा रहा था, जिस तरह से धमकाया जा रहा था — "आप लोग हटिए, रास्ता खाली कीजिए, क्यों वहां खड़े हैं" — मैं समझता हूं कि किसी को भी जब कभी उस अपमान से गुजरने का मौका मिलेगा तो वह सोचेगा कि अच्छा होता कि मैं अपने घर में इज्जत से बैठा रहता। यह अच्छी बात नहीं है कि पार्लियामेंट के मैम्बर को पार्लियामेंट के दरवाजे पर इस तरह से ज़लील किया जाए।

इसलिए, महोदया, मैं आपसे बड़े ही आदर के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि भविष्य में इस तरह की बातें नहीं होनी चाहिए और जो कुछ भी आतंकवाद से निबटने की बात हो, वह संसद भवन परिसर से बाहर होनी चाहिए क्योंकि संसद का यह जो कॉम्प्लेक्स है वह राज्य सभा के सभापति का होता है या लोक सभा के स्पीकर का राज यहां चलता है, यहां मैं समझता हूं कि किसी दूसरे का राज नहीं चलता है। महोदया, कल की बात से मुझे ऐसा लग रहा है कि जान-बूझकर इस तरह की हरकतें कुछ दिनों से चलाई जा रही हैं। मैं चाहता हूं कि इस मामले को आप स्वयं गंभीरता से लें, इसकी जांच होनी चाहिए और अगर किसी संसद सदस्य को इससे ठेस पहुंची है, उनको बुलाकर उनसे पूछना चाहिए।

महोदया, मैं बड़े आदर के साथ आपको कहना चाहता हूं कि यह मामला राजनीति का नहीं है, यह मामला पक्ष और विपक्ष का नहीं है, यह मामला किसी के ऊपर आक्षेप करने का भी नहीं है।

SHRI G.G. SWELL (Meghalaya): The person should be sacked. The whole of Parliament has been insulted.

श्री शंकर दयाल सिंहः महोदया, यह मामला केवल मेरा नहीं है, बिप्लव दासगुप्त का या बेबी साहब का या सलीम साहब का या मीरा जी का नहीं है, यह हमारे पूरे सदन के सदस्यों का मामला है, जनतंत्र का मामला है। इसलिए मैं बहुत ही आदर के साथ आपसे यह कहना चाहता हूं कि इस संबंध में आप गृह मंत्री जी से बात करें, आप अपने सभापति जी से बात करें, लोक सभा के स्पीकर से बातें करें और आप सदस्यों को आश्वासन दें कस्टोडियन के रूप में कि भविष्य में इस तरह की बातें नहीं होंगी। यही मैं आपसे कहना चाहता

हूं। आपने मुझे समय दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत अनुगृहित हूं।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): Madam, before the discussion is prolonged, I think it will be better....*(Interruptions)*...

श्री एम०ए० बेबी (केरल): चव्हाण साहब, आप बाद में बोल लीजिएगा। ...(व्यवधान)...

SHRI S.B. CHAVAN: I can understand your feeling, but at the same time, please try to listen to what I have to say, and thereafter if you feel like ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Chavhan Saheb say and if you don't feel satisfied with him, then the House is at your command. Ahluwaliaji is also raising his hand.

SHRI S.B. CHAVAN: Madam, it was very unfortunate that yesterday the policy people in fact, got the information that the programme of the Prime Minister was cancelled, and about five minutes thereafter, again and again they got the information, 'no', the Prime Minister is going to some other place to attend a programme. So, in that confusion, they tried to see that the route was cleared. In fact, they had no business to take a van with a loud-
speaker. I have also given instructions to the Police Commissioner that if the vans are fitted with loudspeakers, they should not pass through the Parliament premises. Unfortunately, because of great hurry, in fact—I have come to know—the way the police people talk sometimes creates problems. I have given, almost half-a-dozen times, instructions that they have to be extra polite when they deal with matters relating to Members of Parliament. Normally, they have to be polite, but as far as Members are concerned, they have to be extra polite. These are the standing instructions. I can understand that some Members' feelings might have been hurt. I have given instructions to the concerned security personnel to personally go and apologise to all those Members whose feelings have been hurt and I have also asked the Police Commissioner to see that things of this nature are not repeated, Madam. ...*(Interruptions)*...

SHRI G.G. SWELL: That man should be brought here and he should be sacked from service. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yesterday was a bad day because it happened with me also. ...*(Interruptions)*...Please, one second. Let Chavanji know about it. I was coming to the House at 10.30 A.M. and in front of your house, when I had crossed your house, Chavan Saheb, my car was stopped and they said, "No, no, you cannot go." One man just stood in front of my car and my car could not go. They didn't listen to my security people because I also have some security. I put the glass down and told the policeman, "Look, I am the Deputy Chairman, I have to go to the House, I have a meeting at 10.30." They didn't listen to me. So, I said, "Okay, you do your job. You fire at my car and I am going to Parliament, it is my duty and you do whatever you like." I won't blame that particular policeman because whatever he was told to do, he did. As you know, we a lot of meetings about it and we are very concerend. I have many privilege notices already pending before me and this is adding to insult injury. Yesterdady the Secretariat people were stopped from going to the Annexe.....*(Interruptions)*.

SHRIMATI KAMLA SINHA (Bihar): If it can happen with the Deputy Chairman, then what can happen to us?....*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: They don't know who is in the car. They don't know who is there. They just stop....*(Interruptions)*.....

THE PRAMOD MAHAJAN (Maharashtra): Madam, everytime we are facing that problem, let us have a chooopper for that .....*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Since Chavan Saheb is concerned about it.....*(Interruptions)*....

SHRI G.G. SWELL: They have misbehaved.....*(Interruptions)*....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Chavan Saheb has taken up this matter.... I have been discussing it with him. ....*(Interruptions)*...

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI SIKANDER BAKHT): There are a number of aspects drawn to the notice of the Leader of the House, the Home Minister. Therefore.....*(Interruptions)*....

यहां पर खत्म न कीजिए इस को। इस बात के कई पहलू है जो आपके सामने आने चाहिए। आप जिसको बारी-बारी से बुलाना चाहें, बुलाइए। मैं भी कुछ कहना चाहता हूं।

†[یہاں پر ختم نہ کیجیئے اسکو۔ اس بات کے کئی پہلو ہیں جو آپکے سامنے آنے چاہیئے۔ آپ جسکو باری باری سے بلانا چاہیں۔ میں بھی کچھ کہنا چاہتا ہوں۔]

उपसभापति: जी बारी बारी नहीं....(व्यवधान)...

सदर साहिबा, मुझे इजाज़त दी है या सलीम साहब को?

†[شری سکندر بخت: صدر صاحبہ اجازت دی ہے یا سلیم صاحب کو۔]

उपसभापति: वे खड़े थे पहले सिकन्दर बख्त साहब।

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिमी बंगाल): मैडम, हमारे जो लीडर आॅफ अपोजिशन हैं, इनकी पोलाइटनेस या हमारे जो लीडर आॅफ दि हाउस हैं, इनकी पोलाइटनेस का अगर वन परसेंट भी दिल्ली पुलिस के लोगों को मिलता तो उन्हें इस प्रकार एकसट्रा पोलाइट होने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं होती। इसमें दिक्कत तो यह है कि न तो यह इनडिविजुअल मेम्बर का सवाल है कि हमसे यहां आ कर माफी मांग ले और न तो हम इसे प्रिविलेज समझते हैं कि पुलिस हमें सेल्यूट करे लेकिन दिक्कत यह है कि ये पार्लियामेंट सिक्योरिटी किसकी ज़िम्मेदारी है? यहां ट्रेसपासर्स को ऐलाऊ नहीं किया जाता है, सिक्योरिटी लगाई गई है, गेट लगाए गए है, कैमरे लगाए गए है, कुत्ते लगाए गए है और कितने लोग है आसपास जो घूम रहे हैं।

†[شری محمد سلیم (مغربی بنگال): میڈم ہمارے جو لیڈر آف اپوزیشن ہیں انکی پولائیٹنس یا ہمارے جو لیڈر آف دی ہاؤس ہیں انکی پولائیٹنس کا اگر ایک پرسینٹ بھی دلی پولیس کے لوگوں کو ملتا تو انہیں اس پرکار پولائیٹ ہونے کیلئے کہنے کی ضرورت نہیں ہوتی۔ اسمیں دقت تو یہ ہے کہ نہ تو یہ انڈیویجول ممبر کا سوال ہے کہ ہم سے یہاں آکر معافی مانگ لیں اور نہ تو ہم اسے پریویلیج سمجھتے ہیں کہ پولیس ہمیں سیلیوٹ کرے لیکن دقت یہ ہے کہ پارلیمنٹ کی سیکیوریٹی کس کی ذمہ داری ہے۔ یہاں ٹریس پاسرس کو ایلاؤ نہیں کیا جاتا ہے۔ سیکیوریٹی لگائی گئی ہے۔ گیٹ لگائے گئے ہیں، کیمرے لگائے گئے ہیں۔ کتے لگائے گئے ہیں اور کتنے لوگ ہیں جو آس پاس گھوم رہے ہیں۔]

श्रीमती रेणुका चौधरी (आंध्र प्रदेश): बिल्ली भी है काली वाली "ब्लैक कैट"।

श्री मोहम्मद सलीम: और उसके बावजूद भी अगर यहां से प्राइम मिनिस्टर गुजरते हैं, जो इस सदन के लीडर हैं.....

†[شری محمد سلیم: اور اسکے باوجود بھی اگر یہاں سے پرائم منسٹر گزرتے ہیں جو اس سدن کے لیڈر ہیں۔۔۔]

उपसभापतिः सिक्योरिटी की बात है। दो प्राइम मिनिस्टर हम लोग खो चुके हैं। उनकी जान को खतरा है।

श्री मोहम्मद सलीमः ठीक है, सिक्योरिटी का सवाल है। सिक्योरिटी होनी चाहिए।

†[شری محمد سلیم: ٹھیک ہے سیکیورٹی کا سوال ہے۔ سیکیورٹی ہونی چاہیے۔]

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार): किससे खतरा है, यह भी तो तय कर लीजिए।

श्री मोहम्मद सलीमः वे तो सदन में आते हैं, पार्लियामेंट के अंदर आते हैं, भाषण देते हैं, यहां इस हाउस के पार्ट हैं वे जब यहां आते हैं तो बाहर जितना खतरा होता है उतना खतरा यहां तो नहीं होता है। यह बहुत प्रोटेक्टेड एरिया है, यह तो आप मानते हैं। पूरी दिल्ली को, पूरे मुल्क को हम प्रोटेक्ट नहीं कर सकते हैं जितना इस पार्लियामेंट हाउस को प्रोटेक्ट किया हुआ है या राष्ट्रपति भवन को किया हुआ है। तो राष्ट्रपति भवन में जब राष्ट्रपति जाते हैं तो क्या उनके लिए भी ऐसा बंदोबस्त नहीं करना पड़ता है जैसे यह बाहर करना पड़ता है? तो क्या प्रधान मंत्री पार्लियामेंट को अपना सदन नहीं मानते हैं, अपना घर नहीं मानते? प्रधान मंत्री की सिक्योरिटी के जो लोग हैं, क्या वे इस बात से इंकार कर सकते हैं कि यह उनकी जगह नहीं है? वे किसी गैर-जिम्मेदार जगह पर आ रहे हैं, बाहर के लोग जहां पर, हम दुश्मन बैठे हैं यहां पर?

†[شری محمد سلیم: وہ تو سدن میں آتے ہیں۔ پارلیمنٹ کے اندر آتے ہیں بھاشن دیتے ہیں یہاں اس ہاؤس کے پارٹ ہیں۔ وہ جب یہاں آتے ہیں تو باہر جتنا خطرہ ہوتا ہے اتنا خطرہ یہاں تو نہیں ہوتا ہے۔ یہ بہت پروٹیکٹیڈ ایریا ہے یہ تو آپ مانتے ہیں۔ پوری دلی کو۔ پورے ملک کو پروٹیکٹ نہیں کر سکتے ہیں جتنا ہم نے پارلیمنٹ ہاؤس کو پروٹیکٹ کیا ہوا ہے۔ یا راشٹرپتی بھون کو کیا ہوا ہے۔ تو راشٹرپتی بھون میں جب راشٹرپتی جاتے ہیں تو کیا ان کے لئے بھی ایسا بندوبست نہیں کرنا پڑتا ہے۔ جیسے یہ باہر کرنا پڑتا ہے۔ تو کیا پردھان منتری پارلیمنٹ کو اپنا سدن نہیں مانتے ہیں۔ اپنا گھر نہیں مانتے۔ پردھان منتری کی سیکیورٹی کے جو لوگ ہیں۔ کیا وہ اس بات سے انکار کر سکتے ہیں کہ ان کی جگہ نہیں ہے۔ وہ کسی غیر ذمہ دار جگہ پر آ رہے ہیں۔ باہر کے لوگ ہیں جہاں پر۔ ہم دشمن بیٹھے ہیں یہاں پر۔]

उपसभापतिः सलीम साहब, बात हो गई ना। अभी क्या ...(व्यवधान)...

श्री मोहम्मद सलीमः बात नहीं हुई है। बात यह हुई है कि यह होम मिनिस्टर साहब की भी जिम्मेदारी नहीं है, आपकी जिम्मेदारी है, स्पीकर साहब की जिम्मेदारी है, चेयरमैन साहब नहीं हैं ...(व्यवधान)... चेयरमैन साहब नहीं हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि राज्य सभा में गार्जन लेस है। ...(व्यवधान)... जो जिम्मेदार अफसर हैं प्राइम मिनिस्टर सिक्योरिटी फोर्स के, उनको यहां बुलाना चाहिए।

†[شری محمد سلیم: بات نہیں ہوئی ہے۔ بات یہ ہوئی ہے کہ یہ ہوم منسٹر صاحب کی بھی ذمہ داری نہیں ہے۔ آپ کی ذمہ داری ہے اسپیکر صاحب کی ذمہ داری ہے۔ چیئرمین صاحب نہیں ہیں... "مداخلت"... چیئرمین صاحب نہیں ہیں تو اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ یہ راجیہ سبھا کے غیر ذمہ دار لوگ ہیں... "مداخلت"... جو ذمہ دار افسر ہیں پرائم منسٹر سیکیورٹی فورس کے ان کو یہاں بلانا چاہیے۔]

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मातंग सिंह): प्राइम मिनिस्टर सिक्योरिटी फोर्स ...(व्यवधान)...

श्री मोहम्मद सलीमः मैं आपके बारे में बता रहा हूं। यह तो अच्छा हुआ मातंग सिंह साहब वहां पहुंच गए वरना ये शंकर दयाल सिंह जी लेटने वाले थे रास्ते पर। हम लोग ऐजिटेटेड भी थे और उन्हें रोक भी रहे थे कि नहीं, नहीं आप लेटें नहीं।

†[شری محمد سلیم: میں آپکے بارے میں بتا رہا ہوں - یہ تو اچھا ہوا ماتنگ سنگھ صاحب وہاں پہونچ گئے ورنہ یہ شنکر دیال سنگھ جی لیٹنے والے تھے راستہ پر- ہم لوگ ایجیٹیٹڈ بھی تھے اور انہیں روک بھی رہے تھے کہ نہیں نہیں لیٹیں نہیں -]

श्री शंकर दयाल सिंहः ये तो रोकने वाले थे वरना हम लोगों के ऊपर से गुजर जाते।

श्री मोहम्मद सलीमः मैं यह कह रहा था कि जान देने की जरूरत नहीं है, लेटने की जरूरत नहीं है लेकिन हमें प्रोटेस्ट करना चाहिए। प्रोटेस्ट किया हम लोगों ने इसलिए मैडम और जो भी अखबार वालों के साथ किया, ऐसी बात नहीं है, के हम लोगों के साथ बदसलूकी की पुलिस ने, उनको माफ करने की जरूरत नहीं है। हम लोग सिर्फ सदन से निकल रहे थे, कुसूर इतना ही था। जो लोग कार पार्किंग से निकल रहे थे, वे जर्नलिस्ट हो सकते हैं, विज़िटर्स हो सकते हैं, हमारे ऑफिसर्स हो सकते हैं, खुद पार्लियामेंट के सिक्योरिटी ऑफिसर्स हो सकते हैं और पार्लियामेंट के मैम्बर हो सकते हैं। उनके साथ जिस तरह से, जिस ढंग से वे बर्ताव कर रहे थे, मैं उसको रिपीट नहीं करना चाहता। वह बिल्कुल गलत था, बहुत बेहुदा था। अगर पार्लियामेंट हाउस के अंदर पार्लियामेंट के मैम्बर्स के सामने इस तरह से कोई बात करता है तो बाहर जो उनके सामने आते हैं उनसे, जनता के साथ किस तरह से वे पेश आते हैं, यह उसकी एक मिसाल है। यह मिसाल है उसकी कि किस तरह से पुलिस फोर्स काम करते हैं। अगर हम सिविलाइज्ड सोसायटी में हैं तो आपको फोर्स को भी सिविलाइज्ड करना पड़ेगा, ट्रेन करना पड़ेगा।

†[شری محمد سلیم: میں یہ کہہ رہا تھا کہ جان دینے کی ضرورت نہیں ہے - لیٹنے کی ضرورت نہیں ہے - لیکن ہمیں پروٹسٹ کرنا چاہئے - پروٹسٹ کیا ہم لوگوں نے اسلئے میڈم اور جو بھی اخبار والوں کے ساتھ کیا ایسی بات نہیں ہے - ہم لوگوں کے ساتھ بدسلوکی کی پولیس نے - انکو معاف کرنے کی ضرورت نہیں ہے - ہم لوگ صرف سدن سے نکل رہے تھے - قصور اتنا ہی تھا - جو لوگ کار پارکنگ سے نکل رہے تھے - وہ جرنلسٹ ہو سکتے ہیں - وزیٹرس ہو سکتے ہیں - ہمارے آفیسرس ہو سکتے ہیں - خود پارلیمنٹ کے سکیورٹی افسرس ہو سکتے ہیں اور پارلیمنٹ کے ممبر ہو سکتے ہیں - انکے ساتھ جس طرح سے وہ برتاؤ کر رہے تھے - میں انکو ریپیٹ نہیں کرنا چاہتا - وہ بالکل غلط تھا - بہت بیہودہ تھا - اگر پارلیمنٹ ہاؤس کے اندر پارلیمنٹ کے ممبرس کے سامنے اس طرح سے کوئی بات کرتا ہے تو باہر جو ہیں - جو وہ پبلک ساتھ جاتے ہیں - ان سے جنتا کے ساتھ کس طرح سے وہ پیش آتے ہیں یہ انکی ایک مثال ہے - یہ مثال ہے انکی کہ کس طرح سے پولیس فورسس کام کرتے ہیں -]

We do not want an uncivilised force to monitor this civilised country.

[اگر یہ سو بلائزڈ سو سائٹی میں ہیں تو آپکی فورس کو بھی سو بلائزڈ کرنا پڑیگا - پھر ہی کرنا پڑیگا -]

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI: That is why we are saying that we are not supporting the Criminal Law. (*Interruptions*)

श्री मोहम्मद सलीमः मैडम, मिनिस्टर ऑफ स्टेट मिस्टर मातंग सिंह वहां गए। उन्होंने कल एक वादा किया था ...(व्यवधान)...

†[شری محمد سلیم: میڈم - منسٹر آف اسٹیٹ ماتنگ سنگھ وہاں گئے - انہوں نے کل ایک وعدہ کیا تھا ... "مداخلت" ...]

श्री दिग्विजय सिंहः पहले मातंग सिंह साहब जवाब दें कि उस वादे का क्या हुआ।

श्री मोहम्मद सलीमः उनको यहां बोलना चाहिए। वे कहते हैं कि हम खबर लाएंगे कि कौन वह बेहूदा अफसर था, उसके बारे में वे सदन में जानकारी देंगे। होम मिनिस्टर साहब उठ गए शंकर दयाल जी के बारे में, अच्छा हुआ लेकिन उनको यह सुओ-मोटो मालूम करना चाहिए था। दिल्ली शहर के अंदर, पार्लियामेंट के अंदर क्या हुआ। ड्यूटी रोस्टर होता है उनका तो प्राइम मिनिस्टर की वार्डन जीप में कौन था? होम मिनिस्टर यहां यह नहीं कह सकते हैं कि स्टेट गवर्नमेंट को खत लिखूंगा और वहां से खत आएगा। इसमें ऐसी बात नहीं है। उन्हें सुओ- मोटो स्टेटमेंट रखना चाहिए कि इसके लिए जिम्मेदार आफिसर कौन था और...

†[شری محمد سلیم: انکو یہاں بولنا چاہیئے وہ کہتے ہیں ہم خبر لگائینگے - کہ کون وہ بیہودہ افسر تھا - اسکے بارے میں سدن میں جانکاری دینگے - ہوم منسٹر صاحب اٹھ گئے - شنکر دیال جی کے بارے میں - اچھا ہوا لیکن انکو یہ سو او موٹو اسٹیٹمنٹ لیکر آنا چاہیئے تھا - بارہ گھنٹے کے بعد -]

†[شری محمد سلیم: "جاری" معلوم کرنا چاہیئے تھا - دلی شہر کے اندر - پارلیمنٹ کے اندر ڈیوٹی روسٹر ہوتا ہے تو پرائم منسٹر کی وارڈن جیپ میں کون تھا - ہوم منسٹر یہاں یہ نہیں کہہ سکتے ہیں کہ اسٹیٹ گورنمنٹ کو خط لکھونگا اور وہاں سے خط آئیگا - اسمیں ایسی بات نہیں ہے - انہیں سو او موٹو اسٹیٹمنٹ رکھنا چاہیئے کہ اس کے لئے ذمہ دار آفیسر کون تھا اور ...]

उपसभापतिः सुनिए, ये बता देंगे कि सारे मेंबर्स ऐजीटेड हैं। मैंने बताया कि पुलिस में पता ही नहीं रहता कि गाड़ी में कौन रहता है। मैं अपनी बता बताती हूं, मेरी गाड़ी में ...(व्यवधान)...

श्री राज बब्बर (उत्तर प्रदेश): अगर पुलिस को यह पता ही नहीं है अंदर गाड़ी में कौन बैठा है तो क्या ऐसे लोगों के हाथ में टाडा कानून का इम्प्लीमेंटेशन होगा, जिनको पता ही नहीं होगा कि यह किस पर लागू करना है। इसीलिए मैं कहता हूं कि ऐसे कानून को न लाइए क्योंकि जब उनको पता ही नहीं है कि यह किस पर लागू करना है।(व्यवधान)

श्रीमती रेणुका चौधरीः मेरे खिलाफ तो केस आज भी है। I had the same experience two years ago. There is a case pending against me. That is adding. insult to injury. There is a case pending against me wherein the Constable has stated that his ears were punctured. But, it was not the

case. The medical report says that he is perfectly all right. The doctor has testified that he took a pencil and punctured his own ears. This case is pending against me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let us not go ahead toomuch.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: It is a false case... *(Interruptions)*... fabricated by the Delhi Police.

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, चौव्हाण साहब ने जो कहा, दरअसल कल के वाकये का मनिफैस्टेशन यह है कि एक पुलिस आफिसर ने पार्लियामेंट मेंबर की तौहीन की। चौव्हाण साहब ने कहा कि मैं चाहता हूं कि वह पुलिस आफिसर आए और माफी मांगे। असल में हम बुनियादी बात से दूर हो गए हैं। कल का जो मनीफैस्टेशन है, वह पूरे सिस्टम की गलती का मनीफैस्टेशन था और बदकिसमती से उस सिस्टम का इज़हार आज हुआ और पुलिस आफिसर के ज़रिए से हुआ। पार्लियामेंट कैम्पस के अंदर ब्लैक कैट और उनकी गाड़ियां जो नजर आती हैं इसका मतलब क्या है? यहां पर पार्लियामेंट के अंदर एक एक आदमी जो आता है वह सोच-समझकर आता है और जिस पर शुबहा किया जा सकता है उसको पार्लियामेंट के अंदर आने ही नहीं दिया जाता। पार्लियामेंट में यह जो तमाशा है यह पूरे सिस्टम का, पूरे अरेंजमेंट का कसूर है। बुनियादी तौर पर उन सिपाहियों या उन आफिसरों को आर्डर मिला होगा। उनको आर्डर किसी से मिलते होंगे। यह सिस्टम क्या है? मैं चौव्हाण साहब, होम मिनिस्टर से बहरहाल इसकी शिकायत कर चुका हूं कि मेंबर आफ पार्लियामेंट की इज्जत सिर्फ पार्लियामेंट कैंपस के अंदर ही न रखी जाए बल्कि बाहर भी इसको रखना जरूरी है और देश भर की पुलिस को इसका सिग्नल जाना चाहिए क्योंकि बतमीज़ियां बाहर भी मेंबर पार्लियामेंट के साथ बहुत होती है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि पूरे सिस्टम में एक बुनियादी खराबी पैदा हो गयी है। अगर पार्लियामेंट के अहूद के अंदर भी यह किया जा सकता है, तो यह पूरे सिस्टम के लिए इंतिहाई शर्मनाक बात है। मैं पूछना चाहता हूं कि रास्ते में 20-20 मिनट गाड़ियां क्यों रोक दी जाती हैं? हिफाजत का यह कोई तरीका है? सिक्योरिटी की कोई हद होती है। आप इसके नाम पर साधारण शहरियों की जिंदगी आपने दूभर कर रखी है। जहां भी चाहते हैं रोक देते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि The whole system needs an overhaul. इसके बगैर नहीं चलेगा। सिपाहियों को पकड़ कर माफी मंगवा दें और उनको पार्लियामेंट के मेंबर के पैरों में डलवा दें, इससे कुछ नहीं है। इसके लिए आपको सिस्टम को बदलना पड़ेगा। यहां यह जो ब्लैक कैट आते हैं, ये तमाम पार्लियामेंट के अंदर कुत्ते लेकर घूमते हैं। यह काहे के लिए घूमते है? जब एक एक आदमी को जांचकर यहां लाया जाता है? माफ करें मैं एक गुस्ताखी की तरफ जा रहा हूं कि प्राइम मिनिस्टर साहब अगर जा रहे हैं तो क्या कोई कयामत आ रही है? पार्लियामेंट के मैम्बर्स के आते जाते उनका रास्ता रोक दिया जाए। क्या तमाशा बना रखा है। पूरे सिक्युरिटी के सिस्टम को बदलने की जरूरत है क्योंकि जो कुछ हुआ है वह पूरे सिस्टम को नाअहली का मेनीफेस्टेशन था।

†[شری سکندر بخت (مدھیہ پردیش):
صدر صاحب ۔ چوان صاحب نے جو کہا دراصل
کل کے واقعہ کا مینی فیسٹیشن یہ ہے کہ ایک
پولیس آفیسر نے پارلیمنٹ ممبر کی توہین کی۔ چوان
صاحب نے کہا کہ میں چاہتا ہوں کہ وہ پولیس
آفیسر آئے اور معافی مانگے ۔ اصل میں ہم
بنیادی بات سے دور ہو گئے ہیں ۔ کل کا
جو مینی فیسٹیشن ہے ۔ وہ پورے سسٹم کی
غلطی کا مینی فیسٹیشن تھا اور بدقسمتی سے
اس سسٹم کا اظہار آج ہوا اور پولیس
آفیسر کے ذریعے ہوا ۔ پارلیمنٹ کیمپس
کے اندر بلیک کیٹ اور انکی گاڑیاں جو نظر
آتی ہیں اسکا مطلب کیا ہے ۔ یہاں پر پارلیمنٹ
کے اندر ایک ایک آدمی جو آتا ہے وہ سوچ
سمجھکر آتا ہے اور جس پر شبہہ کیا جا سکتا ہے
اسکو پارلیمنٹ کے اندر آنے ہی نہیں دیا

جاتا۔ پارلیمنٹ میں یہ جو تماشہ ہے یہ پورے
سسٹم کا۔ پورے اسٹیبلشمنٹ کا قصور ہے بنیادی
طور پر ان سپاہیوں یا ان افسروں کو آرڈر ملا
ہوگا۔ انکو آرڈرس سے ملتے ہونگے۔ یہ سسٹم
گیا ہے۔ میں چوان صاحب۔ ہوم منسٹر
بہرحال انکی شکایت کہ سپاہیوں کا کمر
آف پارلیمنٹ کی عزت صرف پارلیمنٹ
کیمپس کے اندر ہی نہ دیکھی جائے بلکہ باہر
بھی اسکو دیکھنا ضروری ہے اور دہلی شہر
کی پولیس کو اسکا سگنل جانا چاہئے
کیونکہ یہ بدتمیزیاں باہر بھی ممبر پارلیمنٹ
کے ساتھ بہت ہوتی ہیں اسلئے میں کہنا
چاہتا ہوں کہ پورے سسٹم میں ایک بیماری
خسرہ کی پیدا ہو گئی ہے۔ اگر پارلیمنٹ
کے حدود کے اندر یہ کیا جا سکتا
ہے۔ تو پورے سسٹم کیلئے انتہائی خطرناک
شرمناک بات ہے۔ میں پوچھنا چاہتا
ہوں کہ راستے میں بس میں
منٹ گاڑیاں روک دی جاتی
ہیں۔ حفاظت کا یہ کونسا طریقہ ہے۔
سیکیورٹی کی کوئی حد ہوتی ہے۔ آپ
انکے نام پر سارے شہریوں کی زندگی
اپنے دو ٹکڑے کر رکھی ہے۔ جہاں جلسے
جاتے ہیں روک دیتے ہیں۔ میں
میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ [

The whole system needs an overhaul.

[اسکے بغیر نہیں چلیگا۔
سپاہیوں کو پکڑ کر معافی منگوا دیں
اور انکو پارلیمنٹ کے ممبر کے پیروں
میں ڈلوا دیں۔ اس سے کچھ نہیں ہے۔
اسکے لئے آپکو سسٹم کو بدلنا پڑیگا۔
یہاں یہ جو پبلک گیٹ آئے ہیں۔ یہ تمام
پارلیمنٹ کے اندر لئے گئے کر کھوتے نہیں
یہ گاڑی کیلئے ہیں۔ جب آدمی کو جانچ کر
یہاں لایا جاتا ہے۔ معاف کریں مے میں
ایک گستاخی کی طرف جا رہا ہوں کہ پرائم
منسٹر صاحب اگر جا رہے ہیں تو کیا کوئی قیامت
آ رہی ہے۔ پارلیمنٹ کے ممبر کے جانے
جانے ان کا راستہ روک دیا جائے۔ کیا
تماشہ بنا رکھا ہے۔ پورے سیکیورٹی کے
سسٹم کو بدلنے کی ضرورت ہے کیونکہ جو
کچھ ہوا ہے وہ پورے سسٹم کی ناکامی کا
مینی فیسٹیشن تھا۔

["ختم شد"]

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया (बिहार): उपसभापति महोदय, शंकर दयाल सिंह जी ने जो मुद्दा उठाया है कि यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि संसद के परिसर के अन्दर सांसद का अपमान हो, इससे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण बात कोई और नहीं हो सकती है। जहां तक प्रधानमंत्री की सुरक्षा का सवाल है, हम लोगों ने पीछे देखा है कि

सुरक्षा के मामले में समझौता करने पर हमारे साथ धोखा हुआ है। वह धोखा इन्दिरा जी के साथ हुआ, वह धोखा राजीव गांधी के साथ हुआ। पर सुरक्षा का अर्थ यह नहीं है कि संसद के परिसर के अन्दर भी उन्हें कोई डर है। संसद के परिसर के अन्दर जब सब की सिक्युरिटी चेक हो कर के अन्दर आते हैं, गाड़ियों को बाकायदा मिरर लगा कर देखा जाता है, गाड़ी अन्दर लाने के पहले किसी आम आदमी को अपना गेट पास बना कर अन्दर आना पड़ता है। मेरे परिवार के सदस्य भी जब आते हैं तो उनकी भी फ्रिस्किंग होती है, तब वह अन्दर आते हैं। यह जो सुरक्षा व्यवस्था चारों तरफ रखी गई है; यह सुरक्षा व्यवस्था मैंने सोचा था कि यह छावनी इसलिए बनाई गई है कि कहीं बाहर से कोई आक्रमण न हो। बार बार सुनने में आता है जनरल परपज कमेटी में ऐसी बात आई कि बाहर से आतंकवादियों का खेल है, बाहर से आक्रमण हो सकता है, राकेट से हो सकता है, कार बम से हो सकता है। इसलिए यह सुरक्षा की व्यवस्था चारों तरफ की गई है। परन्तु अब महसूस होने लगा है कि परिसर के अन्दर जो पुलिस है उसको अन्दर रहने वाले जो बोनाफाइड संसद् सदस्य है उन्हीं से असुरक्षा का कुछ भाव सा नज़र आ रहा है इसलिए उनको धक्के लगने लगते है, उनकी गाड़ी रोक ली जाती है। आज यह जो घटना घटी है, यह पहली घटना नहीं है। इसके पहले भी बार बार सदन में यह मुद्दा उठाया गया है। महोदया, मैं पूरी तरह से सलीम साहब से सहमत हूं कि हम होम मिनिस्टर साहब को यह बात नहीं कहना चाहते। हम यह बात इस सदन के चेयरमैन को कहना चाहते हैं, इस सदन के स्पीकर को कहना चाहते हैं क्योंकि यह परिसर उनके कंट्रोल में है। 1952 से ले कर 1990 तक पुलिस का पी भी यहां नज़र नहीं आता था। सिर्फ वाच एंड वार्ड हुआ करता था। आज यहां पर वाच एंड वार्ड तो नज़र ही नहीं आता है। सिर्फ पुलिस भरी हुई है जैसे छावनी लग रही है। जब यहां पर क्लोज़ सर्किट कैमरे लगाए गए तो हमने आपत्ति नहीं की क्योंकि हम सुरक्षा के साथ समझौता नहीं करना चाहते है। आपकी गेलरीज़ इंटेलीजेंस के लोगों से, पुलिस के लोगों से भरी हुई हों, हमें कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि सुरक्षा की व्यवस्था है। पर अगर यही सुरक्षा की व्यवस्था हमारा गिरेबान पकड़े, हमारा कालर पकड़ ले, हमें धक्का लगाने लगे तो यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। इस पर विचार करने की जरूरत है। गृह मंत्री जी ने स्वीकार किया कि स्पीकर लगा हुआ, लाऊड स्पीकर लगा हुआ हो तो गाड़ी अन्दर नहीं घुस सकती है चाहे किसी की भी हो। वह गाड़ी हड़बड़ी में घुसी कैसे? उसका रूट चेंज कर सकते थे, दूसरी तरफ ले जा सकते थे, उस गाड़ी को बाहर रोका जा सकता था, दूसरी गाड़ी पायलट कर सकती थी, वह तो एकस्ट्रा पायलट था। पर इसके बावजूद जो यहां गाड़ी घुसी। उस पर सिर्फ यह कह देना कि एक्सट्रा पोलाइट होना चाहिये पोलाइटनेस तो पुलिस की बेसिक रिक्वायरमेंट है, उसको पोलाइट होना चाहिये। यह तो पोलाइट नहीं यहां एक्सट्रा कुछ और है। बात ही करते हैं तो खबरदार, इतने रूड और रफ है, पोलाइट तो होने का सवाल ही नहीं है। महोदया, पुलिस से लोग क्यों घबराते हैं? उनकी बिहेवीयर के कारण सब से बड़ी बात यह है कि यहां जिनकी ड्युटी लगाएं उनको यहां के मैम्बरों की पहचान हो, ऐसे आदमी की ड्युटी लगानी चाहिये। मैं एक सीधी सी बात बोलता हूं। यहां पर माइक पर अनाऊंसमेंट करने के लिए एक कांस्टेबल बैठाया जाता है। कई ऐसे बैठते हैं जो आठ सौ मैम्बरों के नाम से जानते है, शक्ल से पहचान जाते है और अनाऊंसमेंट करते है। लेकिन हर रोज़ आदमी बदल दिया जाता है। वह पूछता है कि आप कौन हैं, क्या नाम है आपका, ऐसे बिहेव करता है जैसे किसी चपड़ासी से बात कर रहा हो। आप हमारी ड्युटी के लिए आए है, हमारी सुरक्षा व्यवस्था के लिए आए है, आप हमारे गिरेबान पर ही पड़ रहे हैं। इस चीज़ के लिए प्रोपर ट्रेनिंग देने की जरूरत है, सुधार लाने की जरूरत है। यह अपमान एक दिन, दो दिन, तीन दिन सहा जा सकता है, नहीं तो यह जो लोग निर्वाचित हो कर के आते हैं आखिर यह कोई गाय भैंस चरा कर नहीं आते। इतने लोगों को रिप्रेज़ेंट करते है, इतनी स्टेट्स को रिप्रेज़ेंट करते है, अपनी बात कह सकते है।

महोदया, मैं एक बात कहना चाहता हूं...

उपसभापतिः गाय भैंस चराने वाले भी शरीफ आदमी हैं वे बुरे नहीं होते हैं।

श्री एस०एस० अहलुवालियाः मैं चाहूंगा कि सुरक्षा व्यवस्था में भी हमें अपने यहां पर ...(व्यवधान) हमारे परिसर का क्षेत्र और बढ़ाकर सुरक्षा व्यवस्था का घेरा बाहर रहना चाहिए क्योंकि बाहर से भी जो लोग आते हैं, जन प्रतिनिधि को देखते हैं कि इतने घेरे के अंदर हैं तो वे भी एक गलत ख्याल लेकर वापस जाते हैं। इसको भी रोकने की जरूरत है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Baby. Let us be brief. let us do some other work also.

SHRI M.A. BABY: Thank you very much, Madam. My hon. colleagues have already covered some of the most important aspects of the most unfortunate thing that happened yesterday, which should not have happened in any democratic or civilised society. Madam, when we discuss the privileges of Members of Parliament, a signal should not go out that we are only concerned about ourselves and our privileges. What happened yesterday to Members of Parliament is not an isolated thing. That is the most unfortunate thing. If Members of Parliament who are supposed to be privileged in exercise of their responsibilities as representatives of people have to face this, what would be the plight of the people? And this has happened within the precincts of the Parliament House building! What would happen to us outside? Madam, what did happen to you when you were coming to Parliament ...*(Interruption)*... outside the Parliament House precincts. Madam, this is a very serious matter which should be discussed and analyses in its entirety. What should be our security perception in the country? Madam, there would be not a single citizen in our country, not to speak of Members of Parliament belonging to this side or that side, who would argue that the security of the Prime Minister should be compromised. Nobody would argue on that. Therefore, I do not have to deal with that issue. Modern gadgets are available today and communication is quick and easy. When the Prime Minister stops at a particular point, within 30—40 seconds, the message can be given to people one kilometre away, five kilometres away or even 10 kilometres away. When the Prime Minister moves or some other VVIP moves, airports are closed for hours together which we have taken up in this House and citizens who travel from one airport to another to catch a flight miss their flights and untold miseries are ecountered by them. I do not want to go into all those details. This is an issue which has come to the focus because of what unfortunate experience we had yesterday.

Madam, at the same time, there have been references that the security has been tightened within the Parliament House. If somebody feels that there is a lax attitude with regard to the security of Members of Parliament within Parliament or that unauthorised people are obtaining passes to come inside Parliament, that can be inquired into. I overheard some such references being made. This has to be looked into. It should be inquired into whether this kind of untoward incident happend by this kind of a consideration by some security personnel. I do not know about that part. There can be the utmost scare so far as the security perception is concerned in respect of the Prime Minister and VVIPs. But the privilege of the citizens of this country should be protected. This is my humble submission. Thank you very much.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, ...*(Interruption)*. Should everybody speak on it? I do not think so.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Madam, I was there. *(Interruption)*.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Upendra was there. Mr. Desai, were you also there? ...*(Interruption)*.... You will narrate the same story. *(Interruption)*.

श्री दिग्विजय सिंह: इनकी तो गाड़ी रोकी गयी। मैं आपको बता रहा हूं। हम लोग एनेक्सी में थे। प्रधान मंत्री जी इधर से जा रहे थे। हम लोग पैदल उसी एनेक्सी में जा रहे थे, सिक्योरिटी वाले ने एनेक्सी में ही रोक दिया कि आप इधर से नहीं जा सकते हैं। हमने कहा यह कौन सा तरीका आप लोगों ने निकाला है। अभी प्रधान मंत्री हमारे ही साथ भोज खा रहे थे हम वहां उनके लिए विक्टिम नहीं बने, यहां हो गए। मैं नहीं कहता हूं इस बात को और न मैंने इसकी कोई नोटिस दी है। मैं वहां अकेला नहीं था, सच्चिदानन्द जी भी थे, हम 7-8 आदमी थे मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि सैक्युरिटी के नाम पर संसद् सदस्यों को बेइज्जत करने का जो यह नया तरीका निकाला गया है यह तरीके को रोकने

की बात सोचनी चाहिए और उससे भी बड़ी बात है मैडम, हम लोग आते हैं, हम लोगों के पास सैल्फ-ड्रिवन गाड़ी है। हम लोगों के पास ड्राईवर नहीं है। आप वहां तक जाएं तो सैक्युरिटी के लोग बाहर गाड़ी पहले से रखे रहते हैं। हम लोग अपनी गाड़ी पार्क नहीं कर सकते हैं। अब यह कौन सा तरीका अपनाया जा रहा है? आप लोग सभा के स्पीकर के पास इन सारी बातों को भेजें कि संसद् सदस्य अपने को अपमानित महसूस करते हैं इस तरह की हरकतों से और इसका कोई नया तरीका निकाला जाए।

उपसभापति: मलकानी जी भी यही कुछ कह रहे थे। कल उनके साथ भी यही हुआ।

श्री दिग्विजय सिंह: एनेक्सी में मलकानी जी के साथ भी यही हुआ है। ...(व्यवधान).

उपसभापति: कल का दिन अच्छा नहीं था, खराब था।

श्री दिग्विजय सिंह: जनरली सैक्युरिटी के नाम पर यह होता है। राष्ट्रपति भवन में भोज के लिए लोगों को बुलाया जाता है। वहां पर एक पार्टी के सम्मानित नेता जब गए तो उनसे कहा गया कि आपका कार्ड कहां है। दिखा नहीं सके तो कहा कार्ड साथ लेकर आइये। उस व्यक्ति को लौटा दिया गया, उस नेता को लौटा दिया गया। अब यह एक घटना नहीं घट रही है। लेकिन जब यह बात आपने शुरू की है तो इसलिए मैं इस बात का जिक्र कर रहा हूं। यह घटना जार्ज फर्नांडीज़ के साथ हुई है। जार्ज फर्नांडीज़ कोई कार्ड लेकर नहीं गए थे। राष्ट्रपति भवन के आखिरी दरवाजे में, पाकिस्तान के राष्ट्रपति के सम्मान में वह भोज हो रहा था। उनसे कहा गया कि आपका कार्ड कहां है। मैं कह रहा हूं कि भाई कि यह जार्ज फर्नांडिज़ हैं। मैंबर पार्लियामेंट है, कैबिनेट मिनिस्टर रह चुके हैं, आपको इनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए लेकिन पुलिस ने और सैक्युरिटी ने कुछ नहीं सुना और उन को अन्दर नहीं जाने दिया। इसलिए उपसभापति महोदया, अपमान का यह जो तरीका अपनाया जा रहा है, मैं इससे चिंतित हूं।

SHRI JAGESH DESAI: May I speak, Madam?

SHRI P. UPENDRA: Madam, you have called me. ...*(Interruption)*.

SHRI JAGESH DESAI: I would like to to put the facts correctly because I was there. It was not the security personnel, but it was the traffic police. The person was speaking very loudly on a loudspeaker. I thought that something had happened. I could not understand it. It was the traffic police speaking very loudly on a loudspeaker. It was not the security personnel. He was speaking very loudly. I thought that some bad incident had happened. That was my first impression. Then, I came to know that he was telling everybody. "Go away. Go away. Go inside. Put all the cars inside." It was the traffic police, and not the security personnel.

It should not happend like this. I think, the Home Minister has assured us...

THE DEPUTY CHAIRMAN: He has assured us already. ...*(Interruption)*...

SHRI DIGVIJAY SINGH: Madam, assurance is not enough. We have been assured several times, but no action has been taken. Some action should be taken.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO (Andhra Pradesh): Madam, I will take just one minute.

SHRI K.R. MALKANI (Delhi): Madam, I think, you called me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will call you.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: One minute.

Madam, Members from various sides of the House have expressed their sentiments. I do not want to repeat what they have already said, but I just want to mention two things.

The point is that none of us is against security. Nobody can say that the Prime Minister or the VIPs should go without security. All that is fine. What I want to say is—I will give one example to let you know how fragile our security system is—that despite all the security that we have and all the precautionary measures that are taken. I have seen many person

who are not even MLAs or MPs, when they walk in through one or the other of the gates to the Parliament House, wearing white *khadi kurta and pajama* are given a salute. and they are allowed to go in. So many times, when my friend, Mr. Ganesan, or somebody else comes in a different kind of clothes, he has to prove his identity. Of course, we show them our cards. If you are going to judge a person whether he is an MP or not by looking at his dress and you let him in, what is the use of all the security that you have? This has happened not once but several times.

SHRI V. NARAYANASAMY: You better wear *khadi* clothes.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: Mr. Narayanasamy, it is my prerogative and privilege to wear what I want. In any case, the security men cannot decide whether one is an MP or not on the basis of the clothes one wears. This is happening.

Number two, in these days of security, you have all kinds of Cats-Black Cats, wild cats, brown cats etc., and they swarm the entire parking place. Cars of MPs are blocked. There is no passage for us to take out our vehicles if we want to go out for lunch and come back to the House quickly. All these security cars with various categories of cats may kindly be asked to park inside the parking lot. The drivers are there and they can come to the porch within five or ten minutes. So, why should they occupy the parking places of the MPs?

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): मैडम, एक मिनिट?

उपसभापति: मलकानी जी ने इस बारे में नोटिस दिया है।

SHRI K. R. MALKANI: Madam, many friends have shared their experience of last evening in the Parliament House. I had a similar and sorry experience yesterday at mid-day.

The hon. Speaker of the Lok Sabha had invited many Members of the two Houses for lunch in the Annexe. When I and many others went to the car park to get out the cars, we could not take them out. When we asked the Police what was the matter, they said they were waiting for the Speaker to go. That took a few minutes — eight minutes, ten minutes, twelve minutes. But waiting in the sun in the hot car, ten minutes becames ten hours.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We are not discussing the Speaker. I would not permit anything about him. सेक्युरिटी की बात कीजिए। स्पीकर का नाम मत लीजिए।

SHRI K. R. MALKANI: I am not referring to him. Kindly have patience. When we were going to come out, a small crowd had collected. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have got a certain way of doing things. I never allow any discussion over the Speaker of the Lok Sabha. *(Interruptions)* Let him talk about the security, but not get agitated. Let me deal with this issue in my own way. *(Interruptions)* Please, let me deal with it myself.
प्लीज, आप अपनी बात कीजिए।

SHRI K. R. MALKANI: A small crowd had collected there and if the hon. Speaker or the Prime Minister had heard their sarcastic comments, they would have felt that something needs to be done about the security arrangements. When, at last, we managed to reach the Parliament House Annexe, we were told not to enter from the entry point, but from the exit point. So, we had to back the cars back and enter from the exit point. Once we were in, we wanted to park the car where we normally park them. They said: "No, you cannot park them here in the shade. You go and park them in the sun." And some of us refused. Officer after officer came running to us begging of us to park in the sun. I said: "Look, the hon. Speaker had called us. We are Members of Parliament. We are his

guests. We would not like to park our cars in the sun. If you don't allow us we are not going." I am not blaming anybody. We have the greatest respect for the Prime Minister, the Speaker and all other office-holders. I am not complaining against the Police officers either. They were not rude to me. They were carrying out their orders. They only point is that orders should be reasonable. They should be imaginative. We are all for security of our VIPs. There is no doubt about it. But what kind of instructions are these that if the Prime Minister's or any leader's car passes, all other cars must stop? My submission to the hon. Home Minister is that security must be effective, not demonstrative. Today it is being used as it was done during the British days. Police bandobast all around. You take police people ahead of you, you take police people behind you. This must stop. *(Interruptions)* Not only that, even in the city, when leaders move out, people are made to stand, traffic stopped. It is a nuisance for the general public. Something has got to be done about it. As our leader, Shri Sikander Bakht has pointed out, the entire system needs to be looked into and overhauled.

उपसभापति: होम मिनिस्टर साहब ने शुरू में कहा कि

In the beginning itself he felt the sentiments of the Members and admitted that loudspeakers should not be used within the Parliament House premises. He has called for a report. He has asked them to send the names. I have had many meetings in the past when some Members were manhandled and not treated properly and I had a lot of privilege notices concerning the security arrangement not only inside the House, but also outside. Home Minister Sahib was really concerned about it. Sikander Bakht Sahib is a Member of the Privileges Committee. He has also dealt with it. We are concerned about the privileges of the Members.

रसायन एवं उर्वरक मंत्री (श्री राम लखन सिंह यादव): लाउड स्पीकर पर नाम पुकार कर कार बुलायी जाती है, वह चालू रहेगा या बंद हो जाएगा?

उपसभापति: राम लखन सिंह जी, अब तो आप कहेंगे कि यहां का लाउड स्पीकर भी बंद कर दो। यहां यह लाऊड स्पीकर की बात नहीं है, लाऊड स्पीकर और हॉर्न पार्लियामेंट प्रिमिसेस में बजाना, आपको पता नहीं होगा, स्टेट असेम्बली का तो मुझे मालूम नहीं, because I have never been a Member. But at least in the Parliament my car cannot use the horn. My driver stopped it. He allows the Members to pass by and then he moves. The other day somebody was reversing a car. One of my staff members was hurt. Now, he is in the hospital. He has received a back injury. His spine is broken. These things are happening in spite of all the security police. This is what I am saying.

श्री राम लखन सिंह: मैडम, असल में मैंने यहां देखा नहीं है। मैं यहां नया हूं, मगर मैंने देखा है कि अस्पताल की जगह लिखा रहता है कि हॉर्न वर्जित है।

उपसभापति: हां, इसीलिए यहां पार्लियामेंट प्रिमिसेस में हॉर्न बजाना मना है क्योंकि पार्लियामेंट में शोर न मचे, डिस्टर्बेन्स न हो, मगर जिनको इजाजत है वह करते हैं।...(व्यवधान)... इस पर उपेन्द्र जी बोलना चाहते हैं। अब एक घण्टा हम लोगों ने इस पर चर्चा कर ली और होम मिनिस्टर साहब ने शुरू में ही बोल दिया, अगर उस पर तसल्ली करके हम लोग उन पर छोड़ दें तो मैं उनके साथ मीटिंग भी कर लूंगी। मतंग सिंह जी ने प्रोमिस किया है, जो कुछ भी हो सकता है, ...

We will take care of it. But having said that, we should not jeopardise the life and security of the Prime Minister or the President or the Speaker or anybody because we have had this experience. We have still terrorists in our country. We have people still facing lots of problems in our country. So, we should take into consideration all these things. But that does not mean that Members should be ill-treated.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): मैडम, टेररिज्म है तो टाडा क्यों नहीं लाते।

श्री शंकर दयाल सिंह: मैडम, सिर्फ एक बात मैं कहना चाहता हूं। गृहमंत्री जी ने जो कहा उससे हम लोग संतुष्ट हैं और आपने भी जो कहा है उससे भी हम संतुष्ट हैं, लेकिन मतंग सिंह जी ने कल यह वायदा किया

था कि मैं इन्क्वायरी करके कहूंगा। वह संसदीय कार्य मंत्री है, महत्वपूर्ण पद पर है और उनके ही इंटरवेंशन से कल एक अशोभनीय काम जो है वह बच्चा है। मैं चाहता हूं कि उनको बताना चाहिए कि उन्होंने इस संबंध में क्या काम किया है?

श्री मतंग सिंह: मैंने बताया, होम मिनिस्टर साहब...(व्यवधान)...

उपसभापति: वह तो होम मिनिस्टर साहब से ही कहेंगे। ...(व्यवधान)...

श्री शंकर दयाल सिंह: उनको कहिए कि वह कुछ कहें कि उन्होंने क्या किया?

उपसभापति: वह क्या बोलेंगे। उनके मंत्रालय से संबंधित नहीं है, गृह मंत्रालय से है। ...(व्यवधान)...

SHRI P. UPENDRA: Madam Deputy Chairman, I was not a victim of yesterday's incident but I was a witness.

Some of us were waiting for our cars in the portico. Suddenly, we heard loud shoutings. We thought that something had happened there; and they were asking us to vacate the premises as if some bombs were going to fall or as if something would happen. In such a loud tone they were shouting and asking people to vacate. I found our hon. Members going in an agitated mood to the middle of the road to stop the convoy. Then we rushed towards them and pacified them and requested them not to create a scene there. We told them that we could bring the matter to your notice and to the notice of the Home Minister and, if necessary, the Prime Minister. But it was very unusual, it was an extension of the medicine which

medicine which they give outside on the road every day. Thousands of citizens are suffering. We know how they treat them also, not in a worthy way. I think the time has come for you to coordinate with the Speaker and the Home Minister so that at least the sanctity of the Parliament premises is maintained and Members are not humiliated. Madam, it is not that we want any special privileges here, but Members come here to discharge their duties.

Madam, this thing has happened several times, not once. We had to do a *dharna* on the road when we were prevented from coming to the Parliament House. Therefore, these things should not recur. I am happy that the Home Minister has assured that he would take action. We also request you to take the initiative and see that fool-proof arrangements are made in the Parliament premises.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, I think that matter is closed. ...(*Interruptions*)... Now that matter is closed.

SHRI DIGVIJAY SINGH: It may be over for you, but not for us.

RE. U.S.A. COERCING INDIA TO SIGN N.P.T.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Madam Deputy Chairperson, I want to raise a very important issue. The United States is trying to browbeat us by several of its actions. Our External Affairs Minister at present is Washington. It appears to me that they want to browbeat India by showing their financial muscle power. Madam, there are three dimensions to this. Firstly, there was a news item, "If you don't sign the NPT, we are not going to supply you the safety instruments for your atomic energy power projects." Madam, this threat is there.

Secondly, the Pressler Amendment has been brought. Earlier, both the economic aid and the military aid to Pakistan had been stopped since 1990. It has, now, been amended by one of the Committees with the result that Pakistan will be getting economic aid. With that economic aid, again, Pakistan will go in for building up its military weaponry and this is a threat to our country.

The third aspect of the matter is very important. The USA, when our External Affairs Minister is there, has passed a resolution that to country which does not side with the USA in the UNO on more